विराम चिह्न

अनुशासन ही देश को महान बनाता है, उसी तरह 'विराम चिह्न' भाषा और साहित्य को व्यवस्थित रुप प्रदान करता है। विराम चिह्न के प्रयोग से मन के भावनाओं की ठीक से अभिव्यक्ति होती है, साथ ही लिखित रूप में प्रस्तुत विचारों में स्पष्टता आती है।

'विराम' का अर्थ है, ठहरना या रुकना। ''वाक्यों, उपवाक्यों या शब्दों के बीच में रुकने को 'विराम' कहते हैं और रुकने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन्हें 'विराम चिह्न' कहते हैं'' दूसरे शब्दों में यों कहें कि ''वाक्य, उपवाक्य, या वाक्यांशों में रचनाकार की मनःस्थिति के ठहराव को संकेत देनेवाले तथा उसे भावों और विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रदान करनेवाले चिह्नों को 'विराम चिह्न' कहते हैं।''

प्रा. कृ. ज. वेदपाठक के शब्दों में कहा जा सकता है - ''शब्दों और वाक्यों का परस्पर संबंध बताने के लिए, उसी तरह किसी विषय को भिन्न-भिन्न विभागों में विभाजित करने के लिए तथा पढ़ने में ठहरने के लिए लिखित रूप में जिन चिह्नों का उपयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।''

इस इकाई में हम हिंदी में प्रयुक्त 'विराम चिह्नों का नामोल्लेख करके हमारे अध्ययन के लिए निर्धारित विराम चिह्नों का ही अध्ययन करेंगे।

हिंदी में निम्नलिखत विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

(1) अल्प विराम। ,

(2) अर्ध विराम। ;

(3) पूर्ण विराम। ।

(4) प्रश्न चिह्न। ?

(5) आश्चर्य या उद्गार चिह्न। !

(6) निर्देशक चिह्न (डैश)। -

(7) कोष्ठक चिह्न। ( )

(8) अवतरण चिह्न। '' ''

(9) विवरण चिह्न। : -

(10) योजक चिह्न। -

अल्प विराम (,)

अल्प विराम का अर्थ है, थोडासा रुकना। वाक्य या वाक्यांश में जहाँ थोड़े समय के लिए रुका जाए, वहाँ अल्पविराम चिह्न का प्रयोग होता है।

(1) संबोधन कारक संज्ञा, तथा संबोधन कारक शब्दों के बाद अल्पविराम यह चिह्न आता है।

उदा. (1) भगवान, आप ही मेरे रक्षक हैं।

(2) लो, यह तो चला गया।

(3) घनश्याम, फिर भी तू सबकी इच्छा पूरी करता है।

(2) जब एक ही शब्द भेद के दो-दो शब्दों के बीच में कोई समुच्चयबोधक अव्यय न हो, वहाँ अल्पविराम चिह्न का उपयोग किया जाता है।

उदा. (1) हम लोग नदी, नाले, झरने पार करते चल रहे थे।

(2) किसान ने भेड, बकरी, गाएँ खरीदी थी।

(3) वहाँ पीले, हरे खेत दिखाई देते थे।

(3) अगर समुच्चय बोधक अव्यय से जोड़े हुए शब्दों पर अधिक जोर देना हो, तो भी अल्पविराम चिह्न का प्रयोग करते हैं।

उदा. (1) आजकल पैसा यह उपयोगी, अतएव आवश्यक है।

(2) यह पुस्तक उपयोगी, अतएव उपादेय है।

(4) जिस समय वाक्य में जोड़े-जोड़े से शब्द आ जाते हैं, उस समय प्रत्येक जोडे के बाद अल्पविराम चिह्न का उपयोग किया जाता है।

उदा. (1) परमात्मा ने दिन और रात, सुख और दुःख, पाप और पुण्य ये सब बनाए हैं।

(2) ये सभी हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश ईश्वर ने अपने पास रखे हैं।

(5) समानाधिकरण शब्दों के बीच में अल्पविराम चिह्न का उपयोग किया जाता है।

उदा. (1) भारत के परराष्ट्रमंत्री, अटलबिहारी वाजपेयी जी ने युनो में हिंदी में भाषण दिया था।

(2) भारत के प्रधानमंत्री, नरेंद्र जी मोदी ने अमरिका में हिंदी में भाषण दिया था।

(6) छंदो में यति के बाद अल्प विराम चिह्न आता है।

उदा. (1) ''अनूठी आभा से, सरस सुषमा से, सुरस से।

बना जो देती थी, वह गुणमयी भू-विपिन को॥''

(7) सकारात्मक और नकारात्मक 'हाँ' या 'नहीं' के बीच में अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदा. (1) हाँ, मैं जरूर जाऊँगा।

(2) नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।

(3) नहीं, यह कदापि नहीं हो सकता।

(8) बस, सचमुच, अतः, वस्तुतः, अच्छा, वास्तव में, खैर आदि से प्रारंभ होनेवाले वाक्यों में इन शब्दों के बाद अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदा. (1) बस, देख लिया तुम्हें।

(2) सचमुच, तुम बड़े अच्छे हो।

(3) अतः, उसका बिल्कुल स्वाभाविक और अनुकूल प्रसार होता है।

(4) अच्छा, तो लिजिए और चलिए।

(9) उद्धरण के पूर्व अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदा. (1) हरिमोहन ने कहा, ''मैं इस बार चुनाव में खड़ा हो रहा हूँ।''

(2) लोकमान्य तिलक ने कहा, ''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।''

(10) जो उपवाक्य किंतु, लेकिन, क्योंकि, पर, परंतु आदि समुच्चय बोधक से प्रारंभ होते हैं, उनमें समुच्चय बोधक अव्यय से पहले अल्पविराम चिह्न लगाया जाता है।

उदा. (1) मैं तुम्हारे साथ नहीं खेलूँगा, किंतु तुम्हारा खेल जरूर देखूँगा।

(2) वह मेरे ही होस्टल में रहता है, लेकिन एक बार भी मुझसे नहीं मिलता।

(11) शोक की अभिव्यक्ति, विस्मयादि बोधक शब्दों के बाद अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदा. (1) हाय, मैं तो लुट गई।

(2) वाह, क्या बात कही आपने।

(3) धिक्कार है, तुमने यह काम किया।

(12) निश्चितता लाने के लिए अल्पविराम का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

उदा. (1) रोको मत, जाने दो।

(2) रोको, मत जाने दो।

(13) 'उदाहरण', 'यथा' आदि के पहले अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है।

उदा. (1) यह बात तो सभी को, उदाहरण के लिए मामूली से मामूली आदमी को - मालूम होनी चाहिए।

(2) वे दोनों अनेक बातों में, यथा खेलने-कूदने, पढ़ने-लिखने, डिबेट में समान थे।

(14) संख्या के अंकों में इकहरे या दुहरे अंकों के पश्चात् अल्पविराम चिह्न आता है।

उदा. 1, 234, 33, 54, ...

निर्देशक चिह्न (डैश) (-)

निर्देशक चिह्न वस्तुतः डैश है, जो समासक चिह्न (-) से अधिक लंबा होता है। इसको ही 'रेखिका' भी कहा गया है। जहाँ किसी पद पर या शब्द पर अधिक बल देना हो, या विवरण प्रस्तुत करना हो, या किसी शब्द के आगे जगह देनी हो, तो निर्देशक चिह्न या 'रेखिका चिह्न' का प्रयोग किया जाता है। आवश्यकतानुसार वाक्य में एक या दो प्रयोग हो सकता है। निर्देशक चिह्न का उपयोग निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है -

1. जिस समय समानाधिकरण शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों का उपयोग किया जाता है, तो उसके बीच में निर्देशक चिह्न का उपयोग किया जाता है।

उदा. (1) प्रातः काल के सौंदर्य में नित्य नयापन- नूतनत्व दिखाई देता है।

(2) छोटे से दुःख के कारण आपको यह नहीं समझना चाहिए, कि आपका जीवन बिगड़ गया- नष्ट हो चुका।

(2) किसी विषय के साथ उसके संबंध में अन्य सूचना देने के लिए, निर्देशक चिह्न का उपयोग करते हैं।

उदा. (1) कुछ साल पहले से काँग्रेस के दो दल निर्माण हुए- एक चव्हाण काँग्रेस, दूसरा इंदिरा काँग्रेस।

(2) स्वतंत्रता आंदोलन के समय राष्ट्रीय काँग्रेस में दो दल निर्माण हुए- एक शांतिपूर्ण ढ़ंग से आंदोलन करनेवाला और दूसरा क्रांति के द्वारा आंदोलन करनेवाला।

(3) किसी व्यक्ति के वाक्यों को उद्धृत करते समय उस वाक्य के पहले निर्देशक चिह्न का उपयोग करते हैं। (नाटक या एकांकी में पात्रों के नाम के आगे उनका संभाषण शुरू होने के पहले निर्देशक चिह्न आता है।)

उदा. (1) बहुत ही मीठे स्वरों के साथ वह गलियों में घूता हुआ कहता- ''बच्चों को बहलाने वाला, खिलौनेवाला।''

(2) स्वामी विवेकानंद कहते थे - ''ज्ञान ही शक्ति है।''

(3) अध्यापक- भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?

विद्यार्थी- डॉ. राजेंद्र प्रसाद।

(4) किसी वाक्य अथवा लेख के अंत में उसके लेखक का नाम लिखने के पूर्व निर्देशक चिह्न लगाया जाता है।

उदा. (1) चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग। - रहीम

(2) जब तुम आए जग में, जग हँसे तुम रोय।

ऐसी करनी कर चलो कि तुम हँसे जग रोय॥ - कबीर

(5) बातचीत के समय रुकावट सूचित करने के लिए, निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदा. (1) मैं - अब - कुछ भी - सोच नहीं - सकता।

(2) मैं - अब - कुछ भी - कर - नहीं सकता।

(6) ऐसे शब्द या अपवाक्य के पूर्व निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जिस पर अवधारण की आवश्यकता होती है।

उदा. (1) फिर क्या था - एक के बाद एक लाठियाँ गिरते सिर पर लगी।

(2) सावरकर जी की किताब का नाम है - १८५७ का स्वतंत्रता समर।

(7) कहना, लिखना, बोलना, बताना आदि क्रियाओं के बाद निर्देशक चिह्न का प्रयोग करते हैं।

उदा. (1) कमला ने कहा- 'मैं कल चली जाऊँगी।'

(2) गीता ने पत्र में लिखा- मैं अगले सप्ताह में गाँव चली आऊँगी।

(3) राम बोला- अब मैं सोच नहीं सकता।

(9) 'निम्नलिखित' और 'निम्नांकित' शब्द के बाद निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदा. (1) नाम निम्निलिखित हैं -

सीता, भारती, विमला।

(2) रचना के आधार पर वाक्य के निम्नांकित भेद हैं - सरल वाक्य, मिश्रवाक्य, संयुक्त वाक्य।

(10) संख्याओं, सन्, या दो नामों के बीच निर्देशक चिह्न का प्रयोग किया जाता है, तब इसका अर्थ होता है, 'यहाँ से यहाँ तक'।

उदा. (1) पृष्ठ 40-52

(2) सन 2022-2023

(3) चंदिगड-दिल्ली

अवतरण (उद्धरण) चिह्न (‘’, ‘‘ ’’)

निम्नलिखित स्थानों पर अवतरण चिह्न का (उद्धरण चिह्न का) उपयोग किया जाता है -

1. जब किसी विद्वान की उक्ति को उधृत करना हो, या फिर वाक्य में किसी शब्द या बात पर अधिक भार देना हो, तो इसे अवतरण चिह्न एवं उद्धरण चिह्न के अंतर्गत रखते हैं।

उदा. (1) प्रेमचंद ने कहा ही है - ‘‘दुनिया अपना ही फायदा देखती है। अपना कल्याण हो, दूसरे जिएँ या मरें।’’

(2) समानता का महत्त्व स्पष्ट करते हुए कबीर ने कहा है- ‘‘घट-घट में साई रमता, ताके कटु वचन मत बोल रे।’’

(3) ‘‘जैसी करनी, वैसी भरनी।’’

(2) व्याकरण, अलंकार, तर्क आदि साहित्य विषयों के उदाहरण देते समय अवतरण चिह्न का उपयोग करते हैं।

उदा. (1) ‘‘मौर्यवंशी राजाओं के समय में भी भारतवासियों को अपने देश का ज्ञान था।’’ यह साधारण वाक्य है।

(2) अनुप्रास अलंकार का उदाहरण-

‘‘लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।

लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल॥’’

(3) कभी-कभी जो संज्ञा-उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के पहले आ जाता है, तब वह अवतरण में लिखा जाता है।

उदा. (1) ''लालबहादुर शास्त्री जी की मौत निश्चित किस कारण हो चुकी''- यह बहुतेरे भारतीय नहीं जानते।

(2) ''नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु निश्चित कैसे हो चुकी'' - यह अनेक भारतीय नहीं जानते।

(4) संवाद लेखन में अवतरण चिह्न का अधिक प्रयोग किया जाता है।

उदा. (1) यवन- ''बंदी करो, सैनिक।''

सैनिक- ''मैं नहीं कर सकता।''

यवन - ''क्यों, गांधार नरेश ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?

सैनिक- ''यही कि, आप जिसे कहें, उसे हम लोग बंदी करके महाराज के पास ले चलें।''

टिप्पणी : नाटक के संवादों में प्रायः अवतरण चिह्नों (उद्धरण चिह्नों) को छोड़ दिया जाता है।

(5) अवतरण चिह्नों (उद्धरण चिह्नों) को पूरे वाक्य के बाद लगाना चाहिए। अवतरण चिह्न से पूर्व विराम चिह्न, प्रश्नवाचक चिह्न, या विस्मय चिह्न लगाया जाएगा।

उदा. (1) मोहन ने कहा था, ''वह कल नहीं आएगा।''

(2) मैंने पूछा, ''क्या ट्रेन आ गई?''

(3) उसने चिल्लाकर कहा, ''वाह! क्या जीत हुई!''

इकहरा अवतरण चिह्न - (‘ ’)

इकहरे अवतरण चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है -

(1) शब्द, वाक्यांश, अथवा वाक्य प्रधान होता है अथवा अवतरण चिह्नों से घिरे हुए वाक्य के बीच में अवतरण की आवश्यकता हो, तो उस समय इकहरे अवतरण चिह्न का - प्रयोग करते हैं।

उदा. (1) ''छोटे बच्चे पानी को ‘पा’ और दूध को ‘दु-दु’ कहते हैं।''

(2) ''छोटे बच्चे घोड़ा को ‘घोला’ और गाड़ी को ‘गाली’ कहते हैं।''

(2) किसी पुस्तक, व्यक्ति आदि के नामों को 'इकहरे अवतरण चिह्न' में रखा जाता है।

उदा. (1) 'प्रसाद' की 'कामायनी' महाकाव्य के रूप में युगों तक प्रतिष्ठित रहेगी।

(2) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने 'परिमल' ग्रंथ की रचना की।

(3) दूसरा अध्याय पढ़ो, जिसका शीर्षक है- 'बात'।

(4) 'साकेत' महाकाव्य है।

(3) समाचार पत्र, लेख, पुस्तक, चित्र, उपनाम, मूर्ति का नाम तथा पदवी और वस्तु के व्यक्तिवाचक नाम लिखते समय अवरतण चिह्न का उपयोग किया जाता है।

उदा. (1) 'पुढारी' नामक समाचार पत्र कोल्हापुर से प्रकाशित होता है।

(2) कोल्हापुर में 'वुड़लैंड' नाम का अच्छा विश्रांति गृह है।